गर्भस्थ शिशु मां से कैसे छिपता है?

सच्चाई यह है कि गर्भस्थ शिशु को मां के प्रतिरक्षा तंत्र से सुरक्षा की ज़रूरत होती है। इस काम में शिशु उन्हीं रसायनों का उपयोग करता है जिनका उपयोग कुछ परजीवी कृमि करते हैं।

मातृत्व के चाहे जितने गुण गाए जाएं मगर सच्चाई यह है कि गर्भस्थ शिशु एक परजीवी होता है। यह एक पहेली है कि मां का प्रतिरक्षा तंत्र गर्भ में पल रहे शिशु और आंवल पर हमला करके उन्हें नष्ट क्यों नहीं कर देता। आखिर शिशु और आंवल दोनों में आधी जिनेटिक सामग्री पिता की होती है। दूसरे शब्दों में मां के शरीर के लिए ये पराई चीज़ें हैं। अब लगता है कि इस पहेली को सुलझा लिया गया है।

यू.के. के रीडिंग विश्वविद्यालय के फिलिप लॉरी ने स्त्रियों और चुहियों के आंवल का अध्ययन करके बताया है कि आंवल कुछ ऐसे पदार्थ बनाता है जिनका उपयोग कई परजीवी कृमि प्रतिरक्षा तंत्र से बचने के लिए करते हैं। और तो और, यह पदार्थ मां के शरीर से ज़्यादा रक्त व पोषण प्राप्त करवाने में भी मददगार साबित होता है।

शोध पत्रिका *जर्नल ऑफ मालीक्यूलर एंडोक्रायनोलॉजी* में प्रकाशित इस पर्चे से यह भी स्पष्ट होता है कि गठिया से पीड़ित कुछ महिलाएं गर्भधारण करने के बाद स्वस्थ कैसे हो जाती हैं। लॉरी का कहना है कि यदि उनका निष्कर्ष सही है तो इससे बार-बार होने वाले स्वतः गर्भपात को रोका जा सकेगा।

आंवल में उपस्थित ये हार्मोन दरअसल लगभग उसी तरह के रसायन हैं जो तंत्रिका तंत्र में संकेतों को लाने-ले जाने का काम करते हैं। इन्हें तंत्रिका संवाहक कहते हैं। मगर जैसे ही इन रसायनों से एक अन्य रासायनिक समूह फॉस्फोकोलीन जुड़ता है, इनकी भूमिका बदल जाती है। लॉरी ने आंवल में एक तंत्रिका संवाहक न्यूरोकाइनिन-बी के साथ फॉस्फोकोलीन को जुड़ा पाया। इसके अलावा एक अन्य तंत्रिका संवाहक हिमोकाइनिन के पूर्ववर्ती पदार्थ से जुड़ा फॉस्फोकोलीन भी देखा गया।

कई परजीवी प्रतिरक्षा तंत्र से छिपने के लिए फॉस्फोकोलीन का उपयोग करते हैं। अतः लॉरी का मत है कि आंवल व गर्भस्थ शिशु को मां के प्रतिरक्षा तंत्र से बचाने में इसकी भूमिका अवश्य होगी। इसके अलावा न्यूरोकाइनिन-बी अतिरिक्त रक्त प्रवाह भी सुनिश्चित करता है। इसकी बदौलत शिशु को पर्याप्त पोषण प्राप्त होता रहता है।

मगर अन्य शोधकर्ताओं को संदेह है। उनका मानना है कि मात्र फॉस्फोकोलीन की उपस्थिति इस बात का प्रमाण नहीं हो सकती कि वह परजीवीनुमा भूमिका निभाता होगा। अभी यह प्रमाणित किया जाना शेष है कि वह कोई भूमिका निभाता भी है या नहीं।

अलबत्ता, लॉरी को उम्मीद है कि वे अंततः फॉस्फोकोलीन के आधार पर ऐसी दवा विकसित कर पाएंगे जो स्वतः गर्भपात को रोकने में कारगर होगी। इसके अलावा इसकी मदद से गठिया की दवाई भी बन सकती है। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***